New Man International Journal of Multidisciplinary Studies
(UGC Approved Journal No. 45886)
ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

35.

मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्राम जन–जीवन

डॉ. बाळासाहेब पगारे
बी.एन. एन. महाविद्यालय भिवंडी

हिंदी का आधुनिक कथा साहित्य विकास के चरम सीमा पर पहुँचा है। वह जीवन के विविध आयामों को प्रस्तुत करने में सफल रहा है। आज कहानी साहित्य मानव जीवन की अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है। प्रेमचंद ने ग्राम जीवन को बड़े करीब से देखा और उसी को अपने कथासाहित्य का आधार बनाया। उनकी कहानियों में ग्राम जीवन की अद्‌भुत झाँकियाँ देखने को मिलती है। भारतीय ग्राम जीवन के अंतरंग और बर्हिरंग को हमारे सामने प्रस्तुत करनेवाले वे पहले कथाकार थे। उनका लक्ष्य गाँव का चित्रण मात्र न होकर मूल्यों की स्थापना करना था। आजादी के बाद हिंदी कथा साहित्य में विविधता और कलात्मकता दिखाई देती है। हिंदी कथा साहित्य नये जोश, नये विषय और नयी चुनौती को स्वीकार करते हुए उभर रहा था। नये युग में वीरेंद्र जैन, कमलाकर त्रिपाठी, राजेंद्र अवस्थी, मिथिलेश्वर, भगवानदास मोरवाल और मिथिलेश्वर आदि कथाकार एक ओर प्रेमचंद की परंपरा अपना विस्तार करते हुए दूसरी ओर नये संदर्भ जोड़ते हुए इस परंपरा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

मिथिलेश्वर समकालिन हिंदी कथ साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षरों में से एक है। हर संवेदनशील साहित्यकार अपने जीवन के यथार्थ को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्ति करता है। अपने समूचे जीवन के भले–बूरे अनुभवों को सच्चाई के साथ अपनी रचना में उजागर करता है। मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण परिवेश का सजीव चित्रण मिलता है। उनकी कहानियों में आज के संघर्षशील व्यक्ति की झलक देखने को मिलती है। उन्होंने भोगे हुए ग्रामीण वास्तविकता को अनुभूति के साथ प्रस्तुत करते हुए ग्रामीण जीवन की विसंगतियों को सुक्ष्मता के साथ रेखांकित किया है।

'बंद रास्तों के बीच' गाँव के जमीनदारों द्‌वारा मजदूरों का शोषण और मजदूरों की व्यथा को उजागर करनेवाली कहानी है। गाँवों में आज भी जमीनदारों के यहाँ मजदूर बनिहारी परंपरा का निर्वाह करते हुए नजर आते हैं। जगेसर मिथिलेश्वर के गाँव का मजदूर है। जो बनिहारी द्‌वारा परिवार का गुजारा करता है। उसके घर में परंपरा से बनिहारी चली आ रही है,परंतु गाँव में कच्ची सड़क की जगह पक्की सड़क बनने की योजना की चर्चा शुरू होती है। कच्ची सड़क पक्की सड़क में बदल जान मतलब विकास का सिलसिला शुरू होने का संकेत है। पक्की सड़क शहर से जुडते ही गाँव में यातायात के साधन शुरू हो जाऐंगे। अतः कहानी का नायक जगेसर पक्की सड़क की चर्चा सुनकर सड़क के किनारे की अपने पुश्तेनी जमीन के टुकडे पर कड़ी मेहनत से झोपडीनुमा दुकान बनवाता है। छोटा व्यवसाय शुरू करके बनिहारी से मुक्त होकर आत्मनिर्भर बनना चाहता है। वह अपने साथियों से अगले साल से बनिहारी छोड़ने के बारे में कहता है। यह खबर जमीनदार तक पहुँच जाती है। गाँव के जमीनदार उसकी यह इच्छा पुरी होने नहीं देते है। परिवर्तन के दौर में एक–एक मजदुर गँवाना जमीनदारों को पसंद नहीं आता। अतः षड़यंत्र के तहत सरकारी अधिकारियों से मिलिभगत करके उसका दुकान रास्ते के बीच दिखाकर उद्‌घाटन के पहले ही तोड़ दिया जाता है। इस दुकान के साथ उसका मोहभंग होता है और उसें सपनों के साथ उसका दम भी टुटता है। कहानी के माध्यम से स्पष्ट है कि भोले–भाले मजदूरों का किस तरह जीवनभर जमीनदारों द्‌वारा शोषण होता है। जगेसर देश के गरीब मजदुरों का प्रतिनिधि बनकर हमारे सामने आता है। इन गरीबों का सपना बिलकुल छोटा होता है, परंतु व्यवस्था अपने स्वार्थ के खातिर उसे चुर–चुर कर देती है। मिथिलेश्वर यही स्पष्ट करना चाहते है कि मजदूरों का सपना जरूर छोटा होता है, परंतु उसका बहुत बड़ा आघात मजदूरों पर होता है। जिसमें से वह कभी उभर नहीं पाता है।

'बीच रास्ते में' गरीब शिक्षित नवयुवकों में बढ़ती बेरोजगारी को उजागर करती है। आज पढे लिखें नौजवान न नौकरी कर पाते हैं, ना खेती कर पाते है। नरेन और उसका बड़ा भाई पुलिस में भर्ती होने के लिए जाते है। वहाँ भारी भीड़ है। पहले बडा भाई चला जाता है तो छोटा भाई नरेन ईख के खेत में छिप जाता है। अपने दोस्त के कहने पर नरेन को भेजने आता है, तो उसकी लाल आखें और मुँह में छाग देखकर साँप सुघने

की आशंका होती है। पर वह नरेन का नाम लेते हुए पागलों की तरह दौड़ता है। बेरोजगारी और अपनी बढ़ती उम्र में पिताजी पर निर्भर रहने से दोनों शर्मिन्दा होते हैं। बेरोजगारी और आर्थिक अभाव के कारण उन्हें आना जीवन व्यर्थ लगने लगता है।

'दूसरा महाभारत' कहानी में गाँव के किसान और शहर के सुविधा भोगी वर्ग के बीच की टकराहट को रेखांकित किया है। एक ही पिता के चार बेटे होते है। बडे और छेटे भाई को पिताजी खेती करने के लिए गाँव में रोकते है और मँझले और सँझले भाई को शहर में पढ़ने के लिए भेज दिया जाता है। उन्हें किसी चीज की कमी नहीं की जाती है। नये कपड़े, खान–पान में उनके पसंदीदा मिलता था। इसके विरूध्द गाँव के भाइयों को ना ढंग का खाना, ना ढंग का पहनना ओढना मिलता था। उनके पुराने कपडे उन्हें मिलते थे, फिर भी उनकी कोई शिकायत नहीं थी। पिताजी के बाद भी शहर के दोनों भाई परिवार के साथ हर छुट्टियों में गाँव आते हैं। गाँव का भाई और उसकी पत्नी दिन–रात उनके लिए खपते रहते हैं कि उन्हें किसी प्रकार की असुविधा न हो। शहर जाते समय अनाज और अन्य सामान लेकर जाते हैं। फिर भी शहर जाने के बाद वे दोनों अपने देहाती भाई से घर खरिदने का कारण देकर खेती में से अपना हिस्सा माँगकर बेचना चाहते है। उन्हें अपने देहाती भाई की कोई चिंता नहीं कि जिसने उनके खातिर खेती की जिम्मेदारी अपने कंधे पर लेकर जीवनभर खपता रहा। इन भाईयों की स्थिति देखकर गाँव के अन्य लोग ड़र जाते है कि कही इस प्रकार से बँटवारे को लेकर झगड़े शुरू न हो जाये। घबराकर पुरा गाँव दो गुटों में विभाजित होकर जोरो का संघर्ष होता है। अतः यह महाभारत का मुख्य कारण है। यहाँ गाँव बनाम शहर का संघर्ष सामने आता है। गाँव के लोग सुखा और बाढ़ जैसी प्रकृतिक आपत्तियों का सामना करते हुए अभाव भरी जिंदगी जीते है, परंतु शहर के लोग भौतिक सुविधा का भोग करके भी गाँव के लोगों के प्रति संवेदनशील नहीं हो पाते हैं। आजादी के बाद भूदान आंदोलन से जो खेती करें उसकी जमीन नीति को लागू किया गया परंतु उस पर अमल अब तक नहीं हो पाया है। परिणाम स्वरूप गाँव–गाँव में इस प्रकार का महाभारत शुरू हुआ है।

'मेघना का निर्णय' कहानी के माध्यम से मिथिलेश्वरजी ने परंपरागत सामाजिक रूढ़ियों तोड़कर अन्याय और शोषण के खिलाफ आवाज उठाई है। मेघना गाँव में मजदूरी करता है। गाँव के जमीदार और पूँजीपति के मनमानी और शोषण के खिलाफ आवाज उठाकर बगावत करता है। अतः उसे बहिष्कृत किया जाता है। गाँव में मजदूरी नहीं मिल पाती वह अन्याय सहकर जीना नहीं चाहता है। वह हर दिन गाँव से शहर जाकर मजदूरी करता है। वह धीरे–धीरे शहर के शोषणकर्ता ठेकेदार से परिचित होकर उनके खिलाफ बगावत करता है। अनेक जगहों पर काम वहाँ के मजदूरों को अपने हक के प्रति जागृत करता है। काम करने पर भी कम मजदूरी देनेवाले रेलबाबू से पंगा लेता है। उसें पिटकर और गालियाँ देकर गाँव आता है। रेलबाबू गाँव के अमीर और ताकतवर लोंगों से मिलकर मजदरों की आवाज दबाने की कोशिश करता है। मेघना सोच समझकर उन लोंगों से टकराने की ठान लेता है। गाँव के मजदेरों को शोषण और अन्याय के विरूध्द प्रेरित करता है। गाँव के मजदूरों को साथ लेकर शोषक वर्ग से संधर्ष करता है। मथिलेश्वरजी ने इस कहानी के माध्यम से समाज के दो वर्ग शोषक और शोषित के बीच के संघर्ष उजागर को उजागर किया है। साथ ही समाज के दुर्बल वर्ग के विषमता भरे जीवन में शोषण और दमण के विरोध क्रांति की चिंगारी को प्रज्वलित किया है।

स्पष्ट है कि उनकी कहानियों में ग्रामीण जीवन के प्रति गहरी संवेदना मिलती है। उनकी कहानियाँ गाँव के संक्रमणशील समाज के अंतर्विरोध, विसंगतियाँ, अन्याय, शोषण, बेरोजगारी, ग्रामीण जीवन में मौजुद अंधविश्वास, सामाजिक अडंबर, रूढ़ियों को उजागर करती है। इनकी कहानियाँ शोषण खिलाफ सामान्य जनता को विद्रोह और क्रांति के लिए उकसाती है और संघर्ष के लिए प्रेरित करती है।

संदर्भ :

1. प्रतिनिधि कहानियाँ – मिथिलेश्वर,राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
2. मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण यथार्थ –डॉ. वर्षा मिश्र
3. बाबूजी (कहानी संग्रह)– मिथिलेश्वर, नया संस्करण, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, 1988
4. बंद रास्तों के बीच (कहानी संग्रह) – मिथिलेश्वर, इंद्रपस्थ प्रकाशन, दिल्ली 1978

❑❑❑